दैनिक जागरण
वाराणसी, रविवार, 23 नवंबर, 2025

दशकों की यात्रा का परिणाम है एआइ

एसएमएस वाराणसी में आयोजित दो दिवसीय राष्ट्रीय कान्फ्रेंस टेककान 2025 को संबोधित करते आइआइटी बीएचयू के निदेशक प्रो . अमित पात्रा • स्रोत कालेज

वाराणसी (वि.): स्कूल आफ मैनेजमेंट साइंसेज के कंप्यूटर साइंस विभाग द्वारा आयोजित दो दिवसीय राष्ट्रीय कान्फ्रेंस 'नेक्स्टजेन एआइ : नवाचार, वैश्विक रुझान और सस्टेनेबल टेक्नोलाजी की खोज' का शनिवार को शुभारंभ हुआ। मुख्य अतिथि आइआइटी बीएचयू के निदेशक प्रो. अमित पात्रा ने बताया कि एआइ कोई अचानक हुई खोज नहीं है। अस्सी के दशक में ही इसकी वैचारिक नींव मजबूत हो चुकी थी। यह दशकों की वैज्ञानिक यात्रा का परिणाम है।

उन्होंने कहा कि आज एआइ के पुनरुद्धार का मुख्य कारण तीन बड़े कारक, बिग डेटा का विस्फोट, जीपीयू आधारित सुपर-फास्ट प्रोसेसिंग, अत्याधुनिक न्यूरल नेटवर्क आर्किटेक्चर है। विशिष्ट अतिथि डेटा एनालिटिक्स प्लेटफार्म ईजबज (पुणे) के उपाध्यक्ष चेतन पांडेय ने कहा कि आज इंटरनेट मीडिया और जनमानस में एआइ को लेकर दो चित्र बन गए हैं। पहला कि एआइ सबकुछ संभाल लेगा और दूसरा कि एआइ सबकी नौकरियां खत्म कर देगा। दोनों ही दृष्टिकोण आधे-अधूरे हैं। एआइ किसी भी तकनीकी प्लेटफार्म की तरह ही एक उपकरण है और उपकरण कभी संपूर्ण व्यवस्था को नष्ट नहीं करते। सिर्फ उसकी कार्यप्रणाली बदलते हैं। एआइ का दुरुपयोग तभी संभव है जब मानव इसके गलत उपयोग को बढ़ावा दे। विशिष्ट अतिथि ग्रेटर इंडिया रिसर्च एंड एडवाइजरी सर्विसेज प्राइवेट लिमिटेड, गुरुग्राम के वाइस-प्रेसिडेंट विश्लेषक नवीन मिश्रा ने एआइ के भविष्य पर प्रभावी प्रस्तुति देते हुए कहा कि एआइ का विकास पांच पीढ़ियों से गुजर चुका है। अब हम उस दौर में प्रवेश कर चुके हैं जहां एआइ स्वयं निर्णय ले सकता है। एसएमएस के निदेशक प्रो. पीएन झा ने अतिथियों का स्वागत किया। संचालन डा. भावना सिंह ने व धन्यवाद प्रस्ताव प्रो. शंभूशरण श्रीवास्तव ने किया। कुलसचिव संजय गुप्ता, प्रो. कमलशील मिश्र (सम्मेलन संयोजक), प्रो. आनंद प्रकाश दुबे, प्रो. राम गोपाल गुप्ता, सुशील कुमार, डा. संदीप कुमार गौतम आदि उपस्थित रहे।

अमर उजाला
वाराणसी | सोमवार, 24 नवंबर 2025

दशकों की वैज्ञानिक यात्रा का परिणाम है एआई : प्रो. अमित पात्रा

वाराणसी (वि)। स्कूल ऑफ मैनेजमेंट साइंसेज के कंप्यूटर साइंस विभाग की ओर से आयोजित दो दिवसीय राष्ट्रीय कॉन्फ्रेंस नेक्स्ट जेन एआई नवाचार, वैश्विक रुझान और सस्टेनेबल टेक्नोलॉजी की खोज का शुभारंभ हुआ। उद्घाटन सत्र में मुख्य अतिथि आईआईटी बीएचयू के निदेशक प्रो. अमित पात्रा ने बताया कि एआई कोई अचानक हुई खोज नहीं है। अस्सी के दशक में ही इसकी वैचारिक नींव मजबूत हो चुकी थी। एआई दशकों की वैज्ञानिक यात्रा का परिणाम है। विशिष्ट अतिथि डेटा एनालिटिक्स प्लेटफॉर्म ईजबज पुणे के उपाध्यक्ष चेतन पांडेय ने एआई के प्रति समाज में फैले भ्रमों और गलतफहमियों पर विस्तार से चर्चा की। विशिष्ट अतिथि ग्रेटर इंडिया रिसर्च एंड एडवाइजरी सर्विसेज प्राइवेट लिमिटेड के प्रेसिडेंट विश्लेषक नवीन मिश्रा ने कहा कि अब हम उस दौर में प्रवेश कर चुके हैं जहां एआई स्वयं निर्णय ले सकता है। एसएमएस के निदेशक प्रो. पीएन झा ने सभी अतिथियों का स्वागत किया। संचालन डॉ. भावना सिंह ने किया। धन्यवाद ज्ञापन प्रो. शंभू शरण श्रीवास्तव ने किया। इस अवसर पर संजय गुप्ता, प्रो. कमलशील मिश्र, प्रो आनंद प्रकाश दबे, प्रो. राम गोपाल गुप्ता, सुशील कुमार आदि मौजूद रहे।

हिन्दुस्तान
रविवार 23 नवंबर 2025

दशकों की वैज्ञानिक यात्रा का परिणाम है एआई

वाराणसी। स्कूल ऑफ मैनेजमेंट साइंसेज के कंप्यूटर साइंस विभाग की ओर से 'नेक्स्टजेन एआई : नवाचार, वैश्विक रुझान और सस्टेनेबल टेक्नोलॉजी की खोज' पर दो दिवसीय राष्ट्रीय कॉन्फ्रेंस शनिवार को शुरू हुआ। मुख्य अतिथि आईआईटी बीएचयू के निदेशक प्रो. अमित पात्रा ने कहा कि एआई दशकों की वैज्ञानिक यात्रा का परिणाम है। विशिष्ट अतिथि डेटा एनालिटिक्स प्लेटफॉर्म, ईज़बज़ (पुणे) के उपाध्यक्ष चेतन पांडेय और विशिष्ट अतिथि नवीन मिश्रा रहे। एसएमएस के निदेशक प्रो. पीएन झा ने अतिथियों का स्वागत किया। उद्घाटन सत्र का संचालन डॉ. भावना सिंह और प्रो. शंभूशरण श्रीवास्तव ने धन्यवाद दिया।

राष्ट्रीय
सहारा
वाराणसी। रविवार • 23 नवम्बर • 2025

एसएमएस में दो दिवसीय राष्ट्रीय कॉन्फ्रेंस का शुभारंभ

दशकों की वैज्ञानिक यात्रा का परिणाम है एआईः प्रो.अमित पात्रा

वाराणसी। स्कूल ऑफ मैनेजमेंट साइंसेज़, वाराणसी के कंप्यूटर साइंस विभाग द्वारा आयोजित दो दिवसीय राष्ट्रीय कॉन्फ्रेंस नेक्स्टजेन एआई : नवाचार, वैश्विक रुझान और सस्टेनेबल टेक्नोलॉजी की खोज का शुभारंभ हुआ। उद्घाटन सत्र में देश के प्रतिष्ठित तकनीकी संस्थानों व उद्योग जगत के विशेषज्ञों ने एआई के ऐतिहासिक विकास, भविष्य की संभावनाओं और उससे जुड़े सामाजिक-नैतिक आयामों पर गहन विचार-विमर्श किया। कॉन्फ्रेंस में विभिन्न विश्वविद्यालयों, शोध संस्थानों और उद्योग प्रतिष्ठानों से आए सैकड़ों प्रतिभागियों ने हिस्सा लिया। मुख्य अतिथि प्रो. अमित पात्रा, निदेशक, आईआईटी, बीएचयू ने कृत्रिम बुद्धिमत्ता के आरंभिक चरणों से लेकर आज के अत्याधुनिक रूप तक के विकास की विस्तृत व्याख्या की। उन्होंने बताया कि ए.आई. कोई अचानक हुई खोज नहीं है। अस्सी के दशक में ही इसकी वैचारिक नींव मजबूत हो चुकी थी। नीलसन की पुस्तक प्रिंसिपल्स ऑफ़ इंटेलिजेंस में ए.आई. की आधारभूत संरचना, नॉलेज रिप्रेज़ेंटेशन, लॉजिक-बेस्ड़ मॉडल्स और एक्सपर्ट सिस्टम्स की चर्चा की गई थी। शुरुआती ए.आई. रूल-बेस्ड ए.आई. था, जो सीमित डेटा और सीमित कम्प्यूटिंग पावर के कारण अपेक्षित सफलता नहीं पा सका। उन्होंने कहा कि आज ए.आई. के पुनरुद्धार का मुख्य कारण तीन बड़े कारक- बिग डेटा का विस्फोट, जीपीयू आधारित सुपर-फास्ट प्रोसेसिंग, अत्याधुनिक न्यूरल नेटवर्क आर्किटेक्चर है। उन्होंने ए.आई. को एक व्यापक कम्प्यूटेशनल प्रणाली बताते हुए कहा कि ए.आई. का वास्तविक सार यह नहीं कि मशीन सोचती है या नहीं, बल्कि यह है कि मशीन किस हद तक मानव-स्तरीय निर्णय प्रक्रिया का अनुकरण कर सकती है।

विशिष्ट अतिथि चेतन पांडेय, उपाध्यक्ष, डेटा एनालिटिक्स प्लेटफॉर्म, ईज़बज़ (पुणे) ने ए.आई. के प्रति समाज में फैले भ्रमों और गलतफहमियों पर विस्तार से चर्चा की। उन्होंने कहा कि आज सोशल मीडिया और जनमानस में ए.आई. को लेकर दो चित्र बन गए है-पहला कि ए.आई. सबकुछ संभाल लेगा और दूसरा कि ए.आई. सबकी नौकरियाँ खत्म कर देगा। दोनों ही दृष्टिकोण आधे-अधूरे है।

विशिष्ट अतिथि नवीन मिश्रा, वाइस-प्रेसिडेंट विश्लेषक, ग्रेटर इंडिया रिसर्च एंड एडवाइजरी सर्विसेज प्राइवेट लिमिटेड, गुरुग्राम ने ए.आई. के भविष्य पर प्रभावी प्रस्तुति देते हुए कहा कि ए.आई. का विकास पाँच पीढ़ियों से गुज़र चुका है- (1) रूल-बेस्ड ए.आई. (2) मशीन लर्निंग ए.आई. (3) डीप लर्निंग ए.आई. (4) जनरेटिव ए.आई. (5) एजेंटिक ए.आई.। अब हम उस दौर में प्रवेश कर चुके है जहां ए.आई. स्वयं निर्णय ले सकता है, अपने लक्ष्य तय कर सकता है और कार्यान्वित भी कर सकता है।

एसएमएस वाराणसी के निदेशक प्रो. पीएन झा ने अतिथियों का स्वागत करते हुए कहा ए.आई. केवल वैज्ञानिक अवधारणा नहीं रह गया, यह वैश्विक अर्थव्यवस्था, शिक्षा, स्वास्थ्य, प्रशासन और पर्यावरणीय स्थिरता को नया स्वरूप दे रहा है। नेक्स्टजेन ए.आई. विशेष रूप से सस्टेनेबिलिटी, डेटा-ड्रिवन डिसीजन मेकिंग और रिस्पॉन्सिबल टेक्नोलॉजी की दिशा में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। उद्घाटन सत्र का संचालन डॉ. भावना सिंह ने किया जबकि प्रो. शंभूशरण श्रीवास्तव ने धन्यवाद प्रस्ताव दिया। इस अवसर पर प्रमुख रूप से निदेशक प्रो. पीएन झा, कुलसचिव संजय गुप्ता, प्रो. कमलशील मिश्र (सम्मेलन संयोजक), प्रो. आनंद प्रकाश दुबे, प्रो. राम गोपाल गुप्ता, सुशील कुमार, डॉ. संदीप कुमार गौतम, विभिन्न विभागों के संकाय सदस्य, शोधार्थी और छात्र बड़ी संख्या में उपस्थित रहे।

आज
रविवार २३ नवम्बर, २०२५

दशकों की वैज्ञानिक यात्रा का परिणाम है ए.आई.- प्रोफेसर अमित पात्रा

-स्कूल ऑफ मैनेजमेंट साइंसेज़ के कंप्यूटर साइंस विभाग की ओर से दो दिवसीय राष्ट्रीय कॉन्फ्रेंस नेक्स्टजेन ए.आई. = नवाचार, वैश्विक रुझान और सस्टेनेबल टेक्नोलॉजी की खोज का शुभारंभ हुआ। मुख्य अतिथि प्रोफेसर अमित पात्रा, निदेशक, आई.आई.टी. (बीएचयू) ने कृत्रिम बुद्धिमत्ता के आरंभिक चरणों से लेकर आज के अत्याधुनिक रूप तक के

विकास की विस्तृत व्याख्या की। उन्होंने बताया कि ए.आई. कोई अचानक हुई खोज नहीं है। अस्सी के दशक में ही इसकी वैचारिक नींव मजबूत हो चुकी थी। नीलसन की पुस्तक प्रिंसिपल्स ऑफ़ इंटेलिजेंस में ए.आई. की आधारभूत संरचना, नॉलेज रिप्रेज़ेंटेशन, लॉजिक-बेस्ड मॉडल्स और एक्सपर्ट सिस्टम्स की चर्चा की गई थी। विशिष्ट अतिथि चेतन पांडेय, उपाध्यक्ष, डेटा एनालिटिक्स प्लेटफॉर्म, ईज़बज़ (पुणे) ने ए.आई. के प्रति समाज में फैले भ्रमों और गलतफहमियों पर विस्तार से चर्चा की। नवीन मिश्रा, वाइस-प्रेसिडेंट विश्लेषक, ग्रेटर इंडिया रिसर्च एंड एडवाइजरी सर्विसेज प्राइवेट लिमिटेड, गुरुग्राम ने ए.आई. के भविष्य पर प्रभावी प्रस्तुति देते हुए कहा कि ए.आई. का विकास पाँच पीढ़ियों से गुज़र चुका है- रूल-बेस्ड ए.आई., मशीन लर्निंग ए.आई., डीप लर्निंग ए.आई., जनरेटिव ए.आई., एजेंटिक ए.आई.। अब हम उस दौर में प्रवेश कर चुके हैं जहां ए.आई. स्वयं निर्णय ले सकता है, अपने लक्ष्य तय कर सकता है और कार्यान्वित भी कर सकता है। एस.एम.एस. वाराणसी के निदेशक प्रोफेसर पी. एन. झा ने अतिथियों का स्वागत करते हुए कहा ए.आई. केवल वैज्ञानिक अवधारणा नहीं रह गया, यह वैश्विक अर्थव्यवस्था, शिक्षा, स्वास्थ्य, प्रशासन और पर्यावरणीय स्थिरता को नया स्वरूप दें रहा है। संचालन डॉक्टर भावना सिंह और प्रोफेसर शंभूशरण श्रीवास्तव ने धन्यवाद ज्ञापन किया। इस अवसर पर निदेशक प्रोफेसर पी. एन. झा, रजिस्ट्रार संजय गुप्ता, प्रोफेसर कमलशील मिश्र , प्रोफेसर आनंद प्रकाश दुबे, प्रोफेसर राम गोपाल गुप्ता, सुशील कुमार, डॉक्टर संदीप कुमार गौतम, विभिन्न विभागों के संकाय सदस्य, शोधार्थी और छात्र बड़ी संख्या में उपस्थित रहे।

जन के साथ-सच के साथ

जनवार्ता

वाराणसी, 23 नवंबर, 2025

दशकों की वैज्ञानिक यात्रा का परिणाम है एआई : प्रो. अमित पात्रा

नेक्स्टजेन एआई पर विशेषज्ञों ने रखे विचार

वाराणसी (जनवार्ता)। स्कूल ऑफ मैनेजमेंट साइंसेज के कंप्यूटर साइंस विभाग द्वारा आयोजित दो दिवसीय राष्ट्रीय कॉन्फ्रेंस नेक्स्टजेन एआई : नवाचार, वैश्विक रुझान और सस्टेनेबल टेक्नोलॉजी की खोज का शुभारंभ हुआ। उद्घाटन सत्र में देश के प्रतिष्ठित तकनीकी संस्थानों व उद्योग जगत के विशेषज्ञों ने एआई के ऐतिहासिक विकास, भविष्य की संभावनाओं और उससे जुड़े सामाजिक-नैतिक आयामों पर गहन विचार-विमर्श किया। कॉन्फ्रेंस में विभिन्न विश्वविद्यालयों, शोध संस्थानों और उद्योग प्रतिष्ठानों से आए सैकड़ों प्रतिभागियों ने हिस्सा लिया।

मुख्य अतिथि प्रो. अमित पात्रा, निदेशक, आईआईटी बीएचयू ने कृत्रिम बुद्धिमत्ता के आरंभिक चरणों से लेकर आज के अत्याधुनिक रूप तक के विकास की विस्तृत व्याख्या की। उन्होंने बताया कि एआई कोई अचानक हुई खोज नहीं है। अस्सी के दशक में ही इसकी वैचारिक नींव मजबूत हो चुकी थी। उन्होंने कहा कि आज एआई के पुनरुद्धार का मुख्य कारण तीन बड़े कारक- बिग डेटा का विस्फोट, जीपीयू आधारित सुपर-फास्ट प्रोसेसिंग, अत्याधुनिक न्यूरल नेटवर्क आर्किटेक्चर हैं।

एसएमएस में राष्ट्रीय संगोष्ठी को सम्बोधित करते प्रो. अमित पात्रा।

विशिष्ट अतिथि चेतन पांडेय, उपाध्यक्ष, डेटा एनालिटिक्स प्लेटफॉर्म, ईजबज (पुणे) ने स्पष्ट किया कि एआई किसी भी तकनीकी प्लेटफॉर्म की तरह ही एक उपकरण है और उपकरण कभी संपूर्ण व्यवस्था को नष्ट नहीं करते, सिर्फ उसकी कार्यप्रणाली बदलते हैं। उन्होंने कहा डेटा प्रोसेसिंग, कस्टमर सर्विस ऑटोमेशन, साइबर सिक्योरिटी, फाइनेंशियल फ्रॉड डिटेक्शन वे क्षेत्र हैं जहां एआई मानव क्षमता को बढ़ाने का काम कर रहा है, न कि प्रतिस्थापन का।

विशिष्ट अतिथि नवीन मिश्रा, वाइस-प्रेसिडेंट विश्लेषक, ग्रेटर इंडिया रिसर्च एंड एडवाइजरी सर्विसेज प्राइवेट लिमिटेड, गुरुग्राम ने एआई के भविष्य पर प्रभावी प्रस्तुति दी। एसएमएस के निदेशक प्रो. पीएन झा ने अतिथियों का स्वागत करते हुए कहा एआई केवल वैज्ञानिक अवधारणा नहीं रह गया, यह वैश्विक अर्थव्यवस्था, शिक्षा, स्वास्थ्य, प्रशासन और पर्यावरणीय स्थिरता को नया स्वरूप दे रहा है। नेक्स्टजेन एआई विशेष रूप से सस्टेनेबिलिटी, डेटा-ड्रिवन डिसीजन मेकिंग और रिस्पॉन्सिबल टेक्नोलॉजी की दिशा में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। उन्होंने कहा इस कॉन्फ्रेंस का उद्देश्य छात्रों, शोधार्थियों और उद्योग विशेषज्ञों को एक ऐसे साझा मंच पर लाना है जहां तकनीक के व्यावहारिक, नैतिक और नवाचार-आधारित आयामों पर सार्थक चर्चा हो सके। दो दिवसीय कॉन्फ्रेंस के दौरान कुल छह तकनीकी सत्र आयोजित किए जाएंगे। देशभर के विश्वविद्यालयों, निजी शोध संस्थानों, स्टार्टअप्स और उद्योग प्रतिष्ठानों से आए विशेषज्ञ अपने शोधपत्र, केस स्टडी और तकनीकी प्रयोग प्रस्तुत करेंगे। उद्घाटन सत्र का संचालन डॉ. भावना सिंह ने किया जबकि प्रो. शंभूशरण श्रीवास्तव ने धन्यवाद प्रस्ताव दिया। इस अवसर पर प्रमुख रूप से कुलसचिव संजय गुप्ता, प्रो. कमलशील मिश्र (सम्मेलन संयोजक), प्रो. आनंद प्रकाश दुबे, प्रो. राम गोपाल गुप्ता, सुशील कुमार, डॉ. संदीप कुमार गौतम, विभिन्न विभागों के संकाय सदस्य, शोधार्थी और छात्र बड़ी संख्या में उपस्थित रहे।

आज

वाराणसी, 23 नवंबर, 2025

दशकों की वैज्ञानिक यात्रा का परिणाम है ए.आई.- प्रोफेसर अमित पात्रा

स्कूल ऑफ मैनेजमेंट साइंसेज के कंप्यूटर साइंस विभाग की ओर से दो दिवसीय राष्ट्रीय कॉन्फ्रेंस नेक्स्टजेन ए.आई. - नवाचार, वैश्विक रुझान और सस्टेनेबल टेक्नोलॉजी की खोज का शुभारंभ हुआ। मुख्य अतिथि प्रोफेसर अमित पात्रा, निदेशक, आई.आई.टी. (बीएचयू) ने कृत्रिम बुद्धिमत्ता के आरंभिक चरणों से लेकर आज के अत्याधुनिक रूप तक के

विकास की विस्तृत व्याख्या की। उन्होंने बताया कि ए.आई. कोई अचानक हुई खोज नहीं है। अस्सी के दशक में ही इसकी वैचारिक नींव मजबूत हो चुकी थी। नीलसन की पुस्तक प्रिंसिपल्स ऑफ़ इंटेलिजेंस में ए.आई. की आधारभूत संरचना, नॉलेज रिप्रेज़ेंटेशन, लॉजिक-बेस्ड मॉडल्स और एक्सपर्ट सिस्टम्स की चर्चा की गई थी। विशिष्ट अतिथि चेतन पांडेय, उपाध्यक्ष, डेटा एनालिटिक्स प्लेटफॉर्म, ईज़बज़ (पुणे) ने ए.आई. के प्रति समाज में फैले भ्रमों और गलतफहमियों पर विस्तार से चर्चा की। नवीन मिश्रा, वाइस-प्रेसिडेंट विश्लेषक, ग्रेटर इंडिया रिसर्च एंड एडवाइजरी सर्विसेज प्राइवेट लिमिटेड, गुरुग्राम ने ए.आई. के भविष्य पर प्रभावी प्रस्तुति देते हुए कहा कि ए.आई. का विकास पाँच पीढ़ियों से गुज़र चुका है- रूल-बेस्ड ए.आई., मशीन लर्निंग ए.आई., डीप लर्निंग ए.आई., जनरेटिव ए.आई., एजेंटिक ए.आई.। अब हम उस दौर में प्रवेश कर चुके हैं जहां ए.आई. स्वयं निर्णय ले सकता है, अपने लक्ष्य तय कर सकता है और कार्यान्वित भी कर सकता है।एस.एम.एस. वाराणसी के निदेशक प्रोफेसर पी. एन. झा ने अतिथियों का स्वागत करते हुए कहा ए.आई. केवल वैज्ञानिक अवधारणा नहीं रह गया, यह वैश्विक अर्थव्यवस्था, शिक्षा, स्वास्थ्य, प्रशासन और पर्यावरणीय स्थिरता को नया स्वरूप दे रहा है। संचालन डॉक्टर भावना सिंह और प्रोफेसर शंभूशरण श्रीवास्तव ने धन्यवाद ज्ञापन किया। इस अवसर पर निदेशक प्रोफेसर पी. एन. झा, रजिस्ट्रार संजय गुप्ता, प्रोफेसर कमलशील मिश्र , प्रोफेसर आनंद प्रकाश दुबे, प्रोफेसर राम गोपाल गुप्ता, सुशील कुमार, डॉक्टर संदीप कुमार मौर्या, विभिन्न विभागों के संकाय सदस्य, शोधार्थी और छात्र बड़ी संख्या

जयदेश

जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी

वाराणसी, 23 नवंबर, 2025

दशकों की वैज्ञानिक यात्रा का परिणाम है कृत्रिम बुद्धिमत्ता

वाराणसी। स्कूल ऑफ मैनेजमेंट साइंसेज, वाराणसी के कंप्यूटर साइंस विभाग द्वारा आयोजित दो दिवसीय राष्ट्रीय कॉन्फ्रेंस नेक्स्टजेन एआई: नवाचार, वैश्विक रुझान और सस्टेनेबल टेक्नोलॉजी की खोज का शुभारंभ 21 नवंबर को हुआ। देशभर के प्रतिष्ठित संस्थानों और उद्योग जगत के विशेषज्ञों की मौजूदगी में एआई के विकास, उपयोग और भविष्य को लेकर विस्तृत चर्चा हुई। कॉन्फ्रेंस में विभिन्न विश्वविद्यालयों व शोध संस्थानों से बड़ी संख्या में प्रतिभागियों ने हिस्सा लिया। उद्घाटन सत्र में मुख्य अतिथि आईआईटी बीएचयू के निदेशक प्रो. अमित पात्रा ने एआई की शुरुआती अवधारणाओं से लेकर आधुनिक एजेंटिक एआई तक के सफर को समझाया। उन्होंने कहा कि एआई किसी एक दिन की खोज नहीं, बल्कि लंबी वैज्ञानिक यात्रा का परिणाम है। अस्सी के दशक में ही एआई की वैचारिक नींव मजबूत हो चुकी थी, लेकिन सीमित डेटा और कम कम्प्यूटिंग क्षमता के कारण शुरुआती रूल-बेस्ड एआई अपेक्षित सफलता नहीं पा सका। आज बिग डेटा, जीपीयू प्रोसेसिंग और उन्नत न्यूरल नेटवर्क तकनीकों ने एआई को नई दिशा दी है। उन्होंने कहा कि एआई का सार मशीन की सोच नहीं, बल्कि मानव जैसी निर्णय क्षमता का अनुकरण है, जिसमें डेटा प्रोसेसिंग, पैटर्न रिकॉग्निशन और प्रेडिक्टिव मॉडलिंग अहम भाग हैं। विशिष्ट अतिथि चेतन पांडेय, उपाध्यक्ष डेटा एनालिटिक्स प्लेटफॉर्म, ईज़बज़, पुणे ने एआई से जुड़े भ्रमों पर प्रकाश डालते हुए कहा कि एआई न तो सबकुछ संभाल लेगा और न ही नौकरियां खत्म कर देगा। यह एक तकनीकी उपकरण है जो मानव क्षमताओं को सशक्त बनाता है—चाहे वह कस्टमर सर्विस ऑटोमेशन हो, साइबर सुरक्षा, वित्तीय धोखाधड़ी की पहचान या डेटा विश्लेषण।

उन्होंने कहा कि दुरुपयोग मानव निर्णयों के कारण होता है, टेक्नोलॉजी स्वयं समस्या नहीं होती। विशिष्ट अतिथि नवीन मिश्रा, वाइस-प्रेसिडेंट विश्लेषक, ग्रेटर इंडिया रिसर्च एंड एडवाइजरी सर्विसेज, गुरुग्राम ने एआई के विकास की पांच पीढ़ियों—रूल-बेस्ड, मशीन लर्निंग, डीप लर्निंग, जनरेटिव एआई और एजेंटिक एआई—का उल्लेख किया। उन्होंने कहा कि अब एआई अपने लक्ष्य तय कर निर्णय लेने की क्षमता विकसित कर रहा है। वर्ष 2035 तक एजीआई एवरेज जनरल इंटेलिजेंस संभव है, जो मानव-स्तर की संज्ञानात्मक क्षमता तक पहुँचेगा और समाज, उद्योग तथा रोजगार में बड़े बदलाव लाएगा। एसएमएस वाराणसी के निदेशक प्रो. पी.एन. झा ने कहा कि एआई केवल विज्ञान का विषय नहीं, बल्कि वैश्विक अर्थव्यवस्था, शिक्षा, स्वास्थ्य और पर्यावरणीय स्थिरता का भविष्य तय करने वाली तकनीक बन चुका है। नेक्स्टजेन एआई सम्मेलन का उद्देश्य छात्रों, शोधार्थियों और उद्योग विशेषज्ञों को एक साझा मंच पर लाकर जिम्मेदार और सस्टेनेबल टेक्नोलॉजी पर सार्थक संवाद स्थापित करना है। दो दिवसीय सम्मेलन में छह तकनीकी सत्र आयोजित होंगे जिनमें देशभर के शोधार्थी अपने शोधपत्र और तकनीकी प्रयोग प्रस्तुत करेंगे। कार्यक्रम का संचालन डॉ. भावना सिंह ने किया और धन्यवाद ज्ञापन प्रो. शंभूशरण श्रीवास्तव ने दिया।

जयदेश
जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी
वाराणसी, 23 नवंबर, 2025

दशकों की वैज्ञानिक यात्रा का परिणाम है कृत्रिम बुद्धिमत्ता

वाराणसी। स्कूल ऑफ मैनेजमेंट साइंसेज़, वाराणसी के कंप्यूटर साइंस विभाग द्वारा आयोजित दो दिवसीय राष्ट्रीय कॉन्फ्रेंस नेक्स्टजेन एआई- नवाचार, वैश्विक रुझान और सस्टेनेबल टेक्नोलॉजी की खोज का शुभारंभ 21 नवंबर को हुआ। देशभर के प्रतिष्ठित संस्थानों और उद्योग जगत के विशेषज्ञों की मौजूदगी में एआई के विकास, उपयोग और भविष्य को लेकर विस्तृत चर्चा हुई। कॉन्फ्रेंस में विभिन्न विश्वविद्यालयों व शोध संस्थानों से बड़ी संख्या में प्रतिभागियों ने हिस्सा लिया। उद्घाटन सत्र में मुख्य अतिथि आईआईटी बीएचयू के निदेशक प्रो. अमित पात्रा ने एआई की शुरुआती अवधारणाओं से लेकर आधुनिक एजेंटिक एआई तक के सफ़र को समझाया। उन्होंने कहा कि एआई किसी एक दिन की खोज नहीं, बल्कि लंबी वैज्ञानिक यात्रा का परिणाम है। अस्सी के दशक में ही एआई की वैचारिक नींव मजबूत हो चुकी थी, लेकिन सीमित डेटा और कम कम्प्यूटिंग क्षमता के कारण शुरुआती रूल-बेस्ड एआई अपेक्षित सफलता नहीं पा सका। आज बिग डेटा, जीपीयू प्रोसेसिंग और उन्नत न्यूरल नेटवर्क तकनीकों ने एआई को नई दिशा दी है। उन्होंने कहा कि एआई का सार मशीन की सोच नहीं, बल्कि मानव जैसी निर्णय क्षमता का अनुकरण है, जिसमें डेटा प्रोसेसिंग, पैटर्न रिकॉग्निशन और प्रेडिक्टिव मॉडलिंग अहम भाग हैं। विशिष्ट अतिथि चेतन पांडेय, उपाध्यक्ष डेटा एनालिटिक्स प्लेटफॉर्म, ईज़बज़, पुणे ने एआई से जुड़े भ्रमों पर प्रकाश डालते हुए कहा कि एआई न तो सबकुछ संभाल लेगा और न ही नौकरियां खत्म कर देगा। यह एक तकनीकी उपकरण है जो मानव क्षमताओं को सशक्त बनाता है—चाहे वह कस्टमर सर्विस ऑटोमेशन हो, साइबर सुरक्षा, वित्तीय धोखाधड़ी की पहचान या डेटा विश्लेषण।

उन्होंने कहा कि दुरुपयोग मानव निर्णयों के कारण होता है, टेक्नोलॉजी स्वयं समस्या नहीं होती। विशिष्ट अतिथि नवीन मिश्रा, वाइस-प्रेसिडेंट विश्लेषक, ग्रेटर इंडिया रिसर्च एंड एडवाइजरी सर्विसेज, गुरुग्राम ने एआई के विकास की पांच पीढ़ियों—रूल-बेस्ड, मशीन लर्निंग, डीप लर्निंग, जनरेटिव एआई और एजेंटिक एआई—का उल्लेख किया। उन्होंने कहा कि अब एआई अपने लक्ष्य तय कर निर्णय लेने की क्षमता विकसित कर रहा है। वर्ष 2035 तक एजीआई एवरेज जनरल इंटेलिजेंस संभव है, जो मानव-स्तर की संज्ञानात्मक क्षमता तक पहुँचेगा और समाज, उद्योग तथा रोजगार में बड़े बदलाव लाएगा। एसएमएस वाराणसी के निदेशक प्रो. पी.एन. झा ने कहा कि एआई केवल विज्ञान का विषय नहीं, बल्कि वैश्विक अर्थव्यवस्था, शिक्षा, स्वास्थ्य और पर्यावरणीय स्थिरता का भविष्य तय करने वाली तकनीक बन चुका है। नेक्स्टजेन एआई सम्मेलन का उद्देश्य छात्रों, शोधार्थियों और उद्योग विशेषज्ञों को एक साझा मंच पर लाकर जिम्मेदार और सस्टेनेबल टेक्नोलॉजी पर सार्थक संवाद स्थापित करना है। दो दिवसीय सम्मेलन में छह तकनीकी सत्र आयोजित होंगे जिनमें देशभर के शोधार्थी अपने शोधपत्र और तकनीकी प्रयोग प्रस्तुत करेंगे। कार्यक्रम का संचालन डॉ. भावना सिंह ने किया और धन्यवाद ज्ञापन प्रो. शंभूशरण श्रीवास्तव ने दिया।

राष्ट्रीय हिन्दी दैनिक

बहुजन समय

वाराणसी, 23 नवंबर, 2025

दशकों की वैज्ञानिक यात्रा का परिणाम है ए .आई .: प्रो अमित पात्रा

- एस.एम.एस. वाराणसी में दो दिवसीय राष्ट्रीय कॉन्फ्रेंस का शुभारंभ।
- नेक्स्टजेन ए.आई. पर विशेषज्ञों ने रखे विचार।

एस.एम.एस वाराणसी में आयोजित दो दिवसीय राष्ट्रीय कांफ्रेंस(TECHCON-2025) को संबोधित करते प्रो. अमित पात्रा, निदेशक,आईआईटी, बी.एच.यू. वाराणसी

वाराणसी 21 नवम्बरः स्कूल ऑफ मैनेजमेंट साइंसेज वाराणसी के कंप्यूटर साइंस विभाग द्वारा आयोजित दो दिवसीय राष्ट्रीय कॉन्फ्रेंस नेक्स्टजेन ए.आई. नवाचार वैश्विक रुझान और सस्टेनेबल टेक्नोलॉजी की खोज का शुभारंभ हुआ। उद्घाटन सत्र में देश के प्रतिष्ठित तकनीकी संस्थानों व उद्योग जगत के विशेषज्ञों ने ए.आई. के ऐतिहासिक विकास [illegible]ष्य की संभावनाओं और उससे जुड़े सामाजिक नैतिक आयामों पर गहन विचार विमर्श किया। कॉन्फ्रेंस में विभिन्न विश्वविद्यालयों शोध संस्थानों और उद्योग प्रतिष्ठानों से आए सैकड़ों प्रतिभागियों ने हिस्सा लिया।मुख्य अतिथि प्रो. अमित पात्रा निदेशक आई.आई.टी. बीएचयू ने कृत्रिम बुद्धिमत्ता के आरंभिक चरणों से लेकर आज के अत्याधुनिक रूप तक के विकास की विस्तृत व्याख्या की। उन्होंने बताया कि ए.आई. कोई अचानक हुई खोज नहीं है। अस' पैटर्न की पहचान प्राकृतिक भाषा की समझ प्रेडिक्टिव मॉडलिंग और एडैप्टिव लर्निंग शामिल हैं। यह एक अत्यंत जटिल और उन्नत इंटीग्रेटेड प्रोग्रामिंग फ्रेमवर्क है।विशिष्ट अतिथि चेतन पांडेय उपाध्यक्ष डेटा एनालिटिक्स प्लेटफॉर्म ईजबज पुणे ने ए.आई. के प्रति समाज में फैले भ्रमों और गलतफहमियों पर विस्तार से चर्चा की। उन्होंने कहा कि आज सोशल मीडिया और जनमानस में ए.आई. को लेकर दो चित्र बन गए हैं पहला कि ए.आई. सबकुछ संभाल लेगा और दूसरा कि ए.आई. सबकी नौकरियाँ खत्म कर देगा। दोनों ही दृष्टिकोण आधे अधूरे हैं। उन्होंने स्पष्ट किया कि ए.आई. किसी भी तकनीकी प्लेटफॉर्म की तरह ही एक उपकरण है और उपकरण कभी संपूर्ण व्यवस्था को नष्ट नहीं करते सिर्फ उसकी कार्यप्रणाली बदलते हैं। उन्होंने कहा डेटा प्रोसेसिंग कस्टमर सर्विस ऑटोमेशन साइबर सिक्योरिटी फाइनेंशियल फ्रॉड डिटेक्शन वे क्षेत्र हैं जहां ए.आई. मानव क्षमता को बढ़ाने का काम कर रहा है न कि प्रतिस्थापन का। ए.आई. का दुरुपयोग तभी संभव है जब मानव इसके गलत उपयोग को बढ़ावा दे।विशिष्ट अतिथि नवीन मिश्रा वाइस-प्रेसिडेंट विश्लेषक ग्रेटर इंडिया रिसर्च एंड एडवाइजरी सर्विसेज प्राइवेट लिमिटेड गुरुग्राम ने ए.आई. के भविष्य पर प्रभावी प्रस्तुति देते हुए कहा कि ए.आई. का विकास पाँच पीढ़ियों से गुजर चुका है। 1 रूल-बेस्ड ए.आई. 2 मशीन लर्निंग ए.आई. 3 डीप लर्निंग ए.आई. 4 जनरेटिव ए.आई. 5 एजेंटिक ए.आई. अब हम उस दौर में प्रवेश कर चुके हैं जहां ए.आई. स्वयं निर्णय ले सकता है अपने लक्ष्य तय कर सकता है और कार्यान्वित भी कर सकता है।2035 तक ए.जी.आई. एवरेज जनरल इंटेलिजेंस का उदय संभव है। इसका अर्थ यह होगा कि मशीन की संज्ञानात्मक क्षमता मनुष्यों के औसत स्तर तक पहुंच जाएगी। यह समाज उद्योग रोजगार और शिक्षा क्षेत्र में व्यापक परिवर्तन लेकर आएगा। उन्होंने कहा कि भारत जैसे युवा देश में ए.आई. स्किलिंग ए.आई. पॉलिसी और ए.आई. एथिक्स पर जल्द काम करने की आवश्यकता है।एस.एम.एस. वाराणसी के निदेशक प्रो. पी. एन. झा ने अतिथियों का स्वागत करते हुए कहा ए.आई. केवल वैज्ञानिक अवधारणा नहीं रह गया। यह वैश्विक अर्थव्यवस्था शिक्षा स्वास्थ्य प्रशासन और पर्यावरणीय स्थिरता को नया स्वरूप दे रहा है। नेक्स्टजेन ए.आई. विशेष रूप से सस्टेनेबिलिटी डेटा ड्रिवन डिसीजन मेकिंग और रिस्पॉन्सिबल टेक्नोलॉजी की दिशा में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। उन्होंने कहा इस कॉन्फ्रेंस का उद्देश्य छात्रों शोधार्थियों और उद्योग विशेषज्ञों को एक ऐसे साझा मंच पर लाना है जहां तकनीक के व्यावहारिक नैतिक और नवाचार आधारित आयामों पर सार्थक चर्चा हो सके।छह तकनीकी सत्र देशभर से आए शोधार्थी देंगे प्रस्तुति।दो दिवसीय कॉन्फ्रेंस के दौरान कुल छह तकनीकी सत्र आयोजित किए जाएंगे। देशभर के विश्वविद्यालयों निजी शोध संस्थानों स्टार्टअप्स और उद्योग प्रतिष्ठानों से आए विशेषज्ञ अपने शोधपत्र केस स्टडी और तकनीकी प्रयोग प्रस्तुत करेंगे।उद्घाटन सत्र का संचालन डॉ. भावना सिंह ने किया जबकि प्रो. शंभूशरण श्रीवास्तव ने धन्यवाद प्रस्ताव दिया। इस अवसर पर प्रमुख रूप से निदेशक प्रो. पी. एन. झा कुलसचिव संजय गुप्ता प्रो. कमलशील मिश्र सम्मेलन संयोजक प्रो. आनंद प्रकाश दुबे प्रो. राम गोपाल गुप्ता सुशील कुमार डॉ. संदीप कुमार गौतम विभिन्न विभागों के संकाय सदस्य शोधार्थी और छात्र बड़ी संख्या में उपस्थित रहे।

पूर्वांचल राज्य

वाराणसी रविवार, 23 नवंबर 2025 | मूल्य 5.00, कुल पृष्ठ 8

03 "राष्ट्रीय हिन्दी दैनिक" 08

एस.एम.एस. वाराणसी में दो दिवसीय राष्ट्रीय कॉन्फ्रेंस का शुभारंभ

एस.एम.एस वाराणसी में आयोजित दो दिवसीय राष्ट्रीय कांफ्रेंस(TECHCON-2025) में उपस्थित प्रो. शम्भू शरण श्रीवास्तव,विशिष्ट अतिथि नवीन मिश्रा,मुख्य अतिथि प्रो. अमित पात्रा,प्रो. पी एन झा, विशिष्ट अतिथि चेतन पांडेय एवं प्रो. कमलशील मिश्रा

एस.एम.एस वाराणसी में आयोजित दो दिवसीय राष्ट्रीय कांफ्रेंस(TECHCON-2025) को संबोधित करते प्रो. अमित पात्रा, निदेशक,आईआईटी, बी.एच.यू. वाराणसी

पूर्वांचल राज्य ब्यूरो

वाराणसी । स्कूल ऑफ मैनेजमेंट साइंसेज़, वाराणसी के कंप्यूटर साइंस विभाग द्वारा आयोजित दो दिवसीय राष्ट्रीय कॉन्फ्रेंस नेक्स्टजेन ए.आई. : नवाचार, वैश्विक रुझान और सस्टेनेबल टेक्नोलॉजी की खोज का शुभारंभ हुआ। उद्घाटन सत्र में देश के प्रतिष्ठित तकनीकी संस्थानों व उद्योग जगत के विशेषज्ञों ने ए.आई. के ऐतिहासिक विकास, भविष्य की संभावनाओं और उससे जुड़े सामाजिक-नैतिक आयामों पर गहन विचार-विमर्श किया। कॉन्फ्रेंस में विभिन्न विश्वविद्यालयों, शोध संस्थानों और उद्योग प्रतिष्ठानों से आए सैकड़ों प्रतिभागियों ने हिस्सा लिया। मुख्य अतिथि प्रो. अमित पात्रा, निदेशक, आई.आई.टी. (बीएचयू) ने कृत्रिम बुद्धिमत्ता के आरंभिक चरणों से लेकर आज के अत्याधुनिक रूप तक के विकास की विस्तृत व्याख्या की। उन्होंने बताया कि ए.आई. कोई अचानक हुई खोज नहीं है। अस्सी के दशक में ही इसकी वैचारिक नींव मजबूत हो चुकी थी। नीलसन की पुस्तक प्रिंसिपल्स ऑ×फ इंटेलिजेंस में ए.आई. की आधारभूत संरचना, नॉलेज रिप्रेज़ेंटेशन, लॉजिक-बेस्ड मॉडल्स और एक्सपर्ट सिस्टम्स की चर्चा की गई थी। शुरुआती ए.आई. रूल-बेस्ड ए.आई. था, जो सीमित डेटा और सीमित कम्प्यूटिंग पावर के कारण अपेक्षित सफलता नहीं पा सका। उन्होंने कहा कि आज ए.आई. के पुनरुद्धार का मुख्य कारण तीन बड़े कारक— बिग डेटा का विस्फोट, जीपीयू आधारित सुपर-फास्ट प्रोसेसिंग, अत्याधुनिक न्यूरल नेटवर्क आर्किटेक्चर हैं।

उन्होंने ए.आई. को एक व्यापक कम्प्यूटेशनल प्रणाली बताते हुए कहा कि ए.आई. का वास्तविक सार यह नहीं कि मशीन सोचती है या नहीं, बल्कि यह है कि मशीन किस हद तक मानव-स्तरीय निर्णय प्रक्रिया का अनुकरण कर सकती है। आधुनिक ए.आई. में डेटा प्रोसेसिंग, पैटर्न की पहचान, प्राकृतिक भाषा की समझ, प्रेडिक्टिव मॉडलिंग और एडैप्टिव लर्निंग शामिल हैं। यह एक अत्यंत जटिल और उन्नत इंटीग्रेटेड प्रोग्रामिंग फ्रेमवर्क है। विशिष्ट अतिथि चेतन पांडेय, उपाध्यक्ष, डेटा एनालिटिक्स प्लेटफॉर्म, ईज़बज़ (पुणे) ने ए.आई. के प्रति समाज में फैले भ्रमों और गलतफहमियों पर विस्तार से चर्चा की।

Bhadaini Mirror

"दशकों की वैज्ञानिक यात्रा का परिणाम है एआई"- प्रो. अमित पात्रा, IIT-BHU निदेशक

एसएमएस वाराणसी में दो दिवसीय राष्ट्रीय कॉन्फ्रेंस 'नेक्स्टजेन एआई' का शुभारंभ, देशभर के विशेषज्ञों ने एआई की पांच पीढ़ियों, भविष्य, नैतिकता और सस्टेनेबल टेक्नोलॉजी पर रखे विचार

By Bhadaini Mirror Nov 22, 2025, 16:57 IST

एस.एम.एस वाराणसी में आयोजित दो दिवसीय राष्ट्रीय कांफ्रेंस(TECHCON-2025) को संबोधित करते प्रो. अमित पात्रा, निदेशक,आईआईटी, बी.एच.यू. वाराणसी

एस.एम.एस वाराणसी में आयोजित दो दिवसीय राष्ट्रीय कांफ्रेंस(TECHCON-2025) में उपस्थित प्रो. शम्भू शरण श्रीवास्तव,विशिष्ट अतिथि नवीन मिश्रा,मुख्य अतिथि प्रो. अमित पात्रा,प्रो. पी एन झा, विशिष्ट अतिथि चेतन पांडेय एवं प्रो. कमलशील मिश्रा

वाराणसी। स्कूल ऑफ मैनेजमेंट साइंसेज़ (एसएमएस) वाराणसी के कंप्यूटर साइंस विभाग द्वारा आयोजित दो दिवसीय राष्ट्रीय कॉन्फ्रेंस "नेक्स्टजेन एआई: नवाचार, वैश्विक रुझान और सस्टेनेबल टेक्नोलॉजी की खोज" का बुधवार को शुभारंभ हुआ। उद्घाटन सत्र में देश के शीर्ष तकनीकी संस्थानों, शोध संस्थानों और उद्योग जगत के विशेषज्ञों ने एआई के ऐतिहासिक विकास, भविष्य की दिशा, सामाजिक प्रभाव और नैतिक चुनौतियों पर विस्तृत विमर्श किया। सम्मेलन में देशभर के विश्वविद्यालयों और संस्थानों से आए सैकड़ों प्रतिभागियों ने हिस्सा लिया।

"अचानक नहीं, दशकों की वैज्ञानिक यात्रा का परिणाम है एआई"- प्रो. अमित पात्रा

मुख्य अतिथि प्रो. अमित पात्रा, निदेशक, IIT (BHU) ने एआई की शुरुआती अवधारणाओं से लेकर आधुनिक आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस तक की वैज्ञानिक यात्रा को विस्तार से समझाया। उन्होंने कहा कि एआई कोई रातों-रात विकसित हुई तकनीक नहीं है, बल्कि 1980 के दशक में ही इसकी वैचारिक संरचना और सिद्धांत मजबूत हो चुके थे। उन्होंने बताया कि नीलसन की पुस्तक "प्रिंसिपल्स ऑफ इंटेलिजेंस" में नॉलेज रिप्रेजेंटेशन, लॉजिक-बेस्ड मॉडल्स और एक्सपर्ट सिस्टम्स की नींव रखी गई थी, लेकिन शुरुआती रूल-बेस्ड एआई डेटा और कंप्यूटिंग संसाधनों की कमी के कारण अपेक्षित सफलताएँ नहीं दे पाया।

पात्रा के अनुसार आधुनिक एआई के तेजी से उभरने के तीन प्रमुख कारण हैं-

1.बिग डेटा का विस्फोट
2. जीपीयू आधारित अल्ट्रा फास्ट प्रोसेसिंग
3. उन्नत न्यूरल नेटवर्क आर्किटेक्चर

उन्होंने कहा- "एआई का सार यह नहीं कि मशीन मानव जैसी सोचती है या नहीं, बल्कि यह कि वह मानव-स्तरीय निर्णय प्रक्रिया का कितना सटीक अनुकरण कर सकती है।"

"एआई नौकरियाँ खत्म नहीं करता, काम करने के तरीकों को बदलता है"— चेतन पांडेय

विशिष्ट अतिथि चेतन पांडेय, उपाध्यक्ष - डेटा एनालिटिक्स प्लेटफॉर्म, ईज़वज़ (पुणे) ने समाज में फैली एआई से जुड़ी गलतफहमियों पर प्रकाश डाला।

उन्होंने कहा कि सोशल मीडिया पर एआई के प्रति दो तरह की चरम धारणाएँ बनाई गई हैं- एआई सब कुछ संभाल लेगा और एआई नौकरियाँ खत्म कर देगा।

दोनों ही अवधारणाएँ वास्तविकता से दूर हैं।

उन्होंने कहा-"एआई किसी उपकरण की तरह ही सहायता करता है, पूरी व्यवस्था को नष्ट नहीं करता। यह मानव क्षमता को बढ़ाता है, उसे प्रतिस्थापित नहीं करता।"

उन्होंने साइबर सिक्योरिटी, वित्तीय धोखाधड़ी विश्लेषण, कस्टमर सपोर्ट और डेटा प्रोसेसिंग में एआई की बढ़ती भूमिका पर भी चर्चा की।

एआई की पाँच पीढ़ियाँ- एजेंटिक एआई और 2035 तक AGI का संकेत

विशिष्ट अतिथि नवीन मिश्रा, वाइस-प्रेसिडेंट (विश्लेषक), ग्रेटर इंडिया रिसर्च एंड एडवाइजरी सर्विसेज, गुरुग्राम ने एआई के विकास को पाँच पीढ़ियों में समझाया-

1. रूल-बेस्ड एआई
2. मशीन लर्निंग एआई
3. डीप लर्निंग
4. जनरेटिव एआई
5. एजेंटिक एआई

उन्होंने कहा कि आज हम उस युग में प्रवेश कर चुके हैं जहाँ एआई स्वयं निर्णय ले सकता है और अपने टार्गेट निर्धारित कर कार्यों को अंजाम दे सकता है।

उन्होंने कहा-"2035 तक एजीआई (एवरेज जनरल इंटेलिजेंस) के विकसित होने की पूरी संभावना है, जो मानव के औसत संज्ञानात्मक स्तर तक पहुँच सकती है।"

यह उद्योग, शिक्षा, प्रशासन और रोजगार क्षेत्र में बड़े बदलाव की ओर संकेत करता है।

एसएमएस वाराणसी के निदेशक ने बताया- क्यों ज़रूरी है 'नेक्स्टजेन एआई'

एसएमएस वाराणसी के निदेशक प्रो. पी.एन. झा ने सभी अतिथियों का स्वागत करते हुए कहा कि एआई अब सिर्फ वैज्ञानिक तकनीक नहीं, बल्कि वैश्विक अर्थव्यवस्था, शिक्षा, स्वास्थ्य, प्रशासन और पर्यावरणीय स्थिरता का प्रमुख आधार बन चुका है।

उन्होंने कहा-"नेक्स्टजेन एआई का उद्देश्य छात्रों, शोधार्थियों और उद्योग जगत को एक साझा मंच प्रदान करना है, जहाँ तकनीक के नैतिक, व्यावहारिक और इनोवेटिव आयामों पर चर्चा हो सके।"

दो दिवसीय सम्मेलन में छह तकनीकी सत्र

कॉन्फ्रेंस के दौरान कुल छह तकनीकी सत्र आयोजित किए जाएंगे, जिनमें देशभर से आए शोधार्थी अपने शोधपत्र, केस स्टडी और तकनीकी प्रयोग प्रस्तुत करेंगे।

उद्घाटन सत्र का संचालन डॉ. भावना सिंह ने किया, जबकि धन्यवाद प्रस्ताव प्रो. शंभूशरण श्रीवास्तव ने दिया।

इस अवसर पर निदेशक प्रो. पी.एन. झा, कुलसचिव संजय गुप्ता, प्रो. कमलशील मिश्र, प्रो. आनंद प्रकाश दुबे, प्रो. राम गोपाल गुप्ता, सुशील कुमार, डॉ. संदीप कुमार गौतम, विभिन्न विभागों के संकाय सदस्य, शोधार्थी और छात्र मौजूद रहे।

FOURTH PILLAR
जनता की आवाज़

काशी शिक्षा

SMS में दो दिवसीय राष्ट्रीय कॉन्फ्रेंस: बोले विशेषज्ञ – AI का विकास पांच पीढ़ियों से होकर गुजरा, 2035 तक एवरेज जनरल इंटेलिजेंस का होगा उदय

By fourthpillarworld
NOV 22, 2025

वाराणसी : AI कोई अचानक हुई खोज नहीं है। अस्सी के दशक में ही इसकी वैचारिक नींव मजबूत हो चुकी थी। नीलसन की पुस्तक प्रिंसिपल्स ऑफ़ इंटेलिजेंस में ए.आई. की आधारभूत संरचना, नॉलेज रिप्रेज़ेंटेशन, लॉजिक-बेस्ड मॉडल्स और एक्सपर्ट सिस्टम्स की चर्चा की गई थी। ये बातें स्कूल ऑफ मैनेजमेंट साइंसेज़ के कांफ्रेंस में मुख्य अतिथि के तौर पर संबोधन करते हुए IIT BHU के निदेशक प्रो. अमित पात्रा ने कहा शुरुआती AI रूल-बेस्ड AI था, जो सीमित डेटा और सीमित कम्प्यूटिंग पावर के कारण अपेक्षित सफलता नहीं पा सका।

वाराणसी के स्कूल ऑफ मैनेजमेंट साइंसेज़ के कंप्यूटर साइंस विभाग द्वारा शनिवार को दो दिवसीय राष्ट्रीय कॉन्फ्रेंस नेक्स्टजेन ए.आई. : नवाचार, वैश्विक रुझान और सस्टेनेबल टेक्नोलॉजी की खोज विषय आयोजन किया गया। कार्यक्रम में देश के प्रतिष्ठित तकनीकी संस्थानों व उद्योग जगत के विशेषज्ञों ने ए.आई. के ऐतिहासिक विकास, भविष्य की संभावनाओं और उससे जुड़े सामाजिक-नैतिक आयामों पर गहन विचार-विमर्श किया। कॉन्फ्रेंस में विभिन्न विश्वविद्यालयों, शोध संस्थानों और उद्योग प्रतिष्ठानों से आए सैकड़ों प्रतिभागियों ने हिस्सा लिया।

AI के पुनरुद्धार का मुख्य कारण तीन बड़े कारक

कार्यक्रम में IIT BHU के निदेशक प्रो. अमित पात्रा ने कहा कि आज AI के पुनरुद्धार का मुख्य कारण तीन बड़े कारक बिग डेटा का विस्फोट, जीपीयू आधारित सुपर-फास्ट प्रोसेसिंग, अत्याधुनिक न्यूरल नेटवर्क आर्किटेक्चर हैं। ए.आई. को एक व्यापक कम्प्यूटेशनल प्रणाली बताते हुए कहा कि ए.आई. का वास्तविक सार यह नहीं कि मशीन सोचती है या नहीं, बल्कि यह है कि मशीन किस हद तक मानव-स्तरीय निर्णय प्रक्रिया का अनुकरण कर सकती है। आधुनिक ए.आई. में डेटा प्रोसेसिंग, पैटर्न की पहचान, प्राकृतिक भाषा की समझ, प्रेडिक्टिव मॉडलिंग और एडैप्टिव लर्निंग शामिल हैं। यह एक अत्यंत जटिल और उन्नत इंटीग्रेटेड प्रोग्रामिंग

AI को लेकर दो चित्र बन गए है

विशिष्ट अतिथि के रूप में डेटा एनालिटिक्स प्लेटफॉर्म, ईज़बज़ के उपाध्यक्ष चेतन पांडे ने AI के प्रति समाज में फैले भ्रमों और गलतफहमियों पर विस्तार से चर्चा की। उन्होंने कहा कि आज सोशल मीडिया और जनमानस में ए.आई. को लेकर दो चित्र बन गए है। पहला कि AI सब कुछ संभाल लेगा और दूसरा कि AI सबकी नौकरियाँ खत्म कर देगा। दोनों ही दृष्टिकोण आधे-अधूरे हैं। उन्होंने स्पष्ट किया कि ए.आई. किसी भी तकनीकी प्लेटफॉर्म की तरह ही एक उपकरण है और उपकरण कभी संपूर्ण व्यवस्था को नष्ट नहीं करते, सिर्फ उसकी कार्यप्रणाली बदलते हैं। उन्होंने कहा डेटा प्रोसेसिंग, कस्टमर सर्विस ऑटोमेशन, साइबर सिक्योरिटी, फाइनेंशियल फ्रॉड डिटेक्शन वे क्षेत्र हैं जहां ए.आई. मानव क्षमता को बढ़ाने का काम कर रहा है, न कि प्रतिस्थापन का। ए.आई. का दुरुपयोग तभी संभव है जब मानव इसके गलत उपयोग को बढ़ावा दे।

AI का विकास पांच पीढ़ियों से गुज़रा, 2035 तक एवरेज जनरल इंटेलिजेंस का उदय संभव

विशिष्ट अतिथि ग्रेटर इंडिया रिसर्च एंड एडवाइजरी सर्विसेज प्राइवेट लिमिटेड, गुरुग्राम के वाइस प्रेसिडेंट विश्लेषक नवीन मिश्रा ने बताया कि AI के भविष्य पर प्रभावी प्रस्तुति देते हुए कहा कि AI का विकास पांच पीढ़ियों से गुज़र चुका है, रूल-बेस्ड, मशीन लर्निंग, डीप लर्निंग जनरेटिव एवं एजेंटिक ए.आई.। अब हम उस दौर में प्रवेश कर चुके हैं जहां ए.आई. स्वयं निर्णय ले सकता है, अपने लक्ष्य तय कर सकता है और कार्यान्वित भी कर सकता है। 2035 तक ए.जी.आई. एवरेज जनरल इंटेलिजेंस का उदय संभव है। इसका अर्थ यह होगा कि मशीन की संज्ञानात्मक क्षमता मनुष्यों के औसत स्तर तक पहुंच जाएगी। यह समाज, उद्योग, रोजगार और शिक्षा-क्षेत्र में व्यापक परिवर्तन लेकर आएगा। उन्होंने कहा कि भारत जैसे युवा देश में ए.आई. स्किलिंग, ए.आई. पॉलिसी और ए.आई. एथिक्स पर जल्द काम करने की आवश्यकता है।

एस.एम.एस. वाराणसी के निदेशक प्रो. पी.एन झा ने अतिथियों का स्वागत करते हुए कहा ए.आई. केवल वैज्ञानिक अवधारणा नहीं रह गया, यह वैश्विक अर्थव्यवस्था, शिक्षा, स्वास्थ्य, प्रशासन और पर्यावरणीय स्थिरता को नया स्वरूप दे रहा है। नेक्स्टजेन ए.आई. विशेष रूप से सस्टेनेबिलिटी, डेटा-ड्रिवन डिसीजन मेकिंग और रिस्पॉन्सिबल टेक्नोलॉजी की दिशा में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। उन्होंने कहा इस कॉन्फ्रेंस का उद्देश्य छात्रों, शोधार्थियों और उद्योग विशेषज्ञों को एक ऐसे साझा मंच पर लाना है जहां तकनीक के व्यावहारिक, नैतिक और नवाचार-आधारित